THE RICH CULTURAL PAST OF INDIA : CONCERNS AND DEMYSTIFICATION OF REALITIES

भारत का समृद्ध सांस्कृतिक अतीत : चिंताएँ एवं वास्तविकताओं का रहस्योद्घाटन

National Seminar

on

The Rich Cultural Past of India : Concerns and Demystification of Realities

19-20 August, 2023

Organized By:

Department of Sociology,
Sardar Bhagat Singh Govt. P.G. College
Rudrapur (U.S.Nagar), Uttarakhand.
(Affiliated to Kumaun University, Nainital)

Sponsored By:

Indian Council of
Social Science Research

Indian Council of Social Science Research (ICSSR), New Delhi.

VIVEK
PRAKASHAN

Dr. Anchalesh Kumar

28

भारतीय बुद्धिजीवी दादाभाई नौरोजी जी के आर्थिक विचार

*डॉ0 सुनील कुमार मौर्य **

सारांश

दादाभाई नौरोजी, भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख व्यक्ति, आर्थिक चिंतन में भी अग्रणी थे। आर्थिक विकास, गरीबी उन्मूलन और भारत से ब्रिटेन तक धन की निकासी पर उनके विचार औपनिवेशिक अर्थशास्त्र पर चर्चा को आकार देने में प्रभावशाली थे। नौरोजी के "ड्रेन थ्योरी" में तर्क दिया गया कि ब्रिटेन की आर्थिक नीतियों ने भारत की संपत्ति को ब्रिटेन में स्थानांतरित करके व्यवस्थित रूप से उसे गरीब बना दिया। उन्होंने भारतीय आर्थिक आत्मनिर्भरता की वकालत की और औपनिवेशिक शासन की शोषणकारी प्रकृति की आलोचना की। आर्थिक राष्ट्रवाद पर नौरोजी के जोर और स्वदेशी औद्योगीकरण की आवश्यकता ने भारत में बाद के आर्थिक विचारकों और नीति निर्माताओं के लिए नींव रखी। उपनिवेशवाद के बाद के आर्थिक विकास और वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं पर उपनिवेशवाद के प्रभाव पर चर्चा में उनके विचार प्रासंगिक बने हुए हैं।

प्रस्तावना

दादाभाई नौरोजी, जिन्हें अक्सर "भारत के ग्रैंड ओल्ड मैन" के रूप में जाना जाता है, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक प्रमुख व्यक्ति थे और 19वीं सदी के अन्त और 20वीं सदी की शुरूआत में भारतीय राजनीति और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में एक अग्रणी बुद्धिजीवी थे। उनके जीवन और कार्य ने राष्ट्रवादी आन्दोलन पर एक अमिट छाप छोड़ी और भारतीयों की पीढ़ियों को प्रेरित करते रहें। 1825 में बॉम्बे (अब मुम्बई) में जन्में दादाभाई नौरोजी एक पारसी बुद्धिजीवी थे जिन्होंने अपना जीवन अपने देश की सेवा और इसके लोगों की भलाई के लिए समर्पित कर दिया। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा बम्बई में और फिर एलफिंस्टन कॉलेज में हुई, जिसने शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में उनके भविष्य की गतिविधियों की नींव रखी। बाद में नौरोजी लन्दन चले गए, जहां उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और राजनीतिक सक्रियता और सामाजिक सुधार में शामिल हो गए। नौरोजी के सबसे महत्वपूर्ण योगदान में से एक अर्थशास्त्र के क्षेत्र में उनका अग्रणी कार्य था, विशेष रूप से भारत से ब्रिटेन तक "धन की निकासी" का उनका सिद्धान्त। अपने मौलिक काम,"भारत में गरीबी और गैर–ब्रिटिश शासन" में नौरोजी ने सावधानीपूर्वक दस्तावेजीकरण किया कि कैसे औपनिवेशिक नीतियों ने ब्रिटिश साम्राज्य को लाभ पहुँचाने के लिए अपने संसाधनों को छीनकर भारत को गरीब बना दिया था। इस अभूतपूर्व विश्लेषण ने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के लाभों के बारे में प्रचलित धारणाओं को चुनौती दी और भारत के आर्थिक शोषण पर व्यापक बहस छेड़ दी। नौरोजी के आर्थिक सिद्धान्त केवल अकादमिक अभ्यास नहीं थे, उन्होंने उनकी राजनीतिक सक्रियता को आधार बनाया।

.....

****असिस्टेंट प्रोफेसर–अर्थशास्त्र विभाग, सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूद्रपुर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड; E-Mail Id- dr.sunilvns@gmail.com, Mobile No.9451959056.***

वह भारतीय स्वशासन के मुखर समर्थक थे और उन्होंने ब्रिटिश संसद में भारतीय प्रतिनिधित्व के लिए अथक अभियान चलाया। 1892 में, वह सेंट्रल फिन्सबरी से लिबरल पार्टी का प्रतिनिधित्व करते हुए ब्रिटिश हाउस ऑफ कामन्स के लिए चुने जाने वाले पहले भारतीय बने। उनके चुनाव ने राजनीतिक अधिकारों के लिए भारत के संघर्ष में एक ऐतिहासिक क्षण को चिह्नित किया और भविष्य के राजनीतिक नेताओं के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया। अपनी आर्थिक और राजनीतिक गतिविधियों के अलावा, नौरोजी सामाजिक सुधार और शिक्षा के कट्टर समर्थक थे। उनका मानना था कि भारत की प्रगति शिक्षा और सामाजिक उत्थान के माध्यम से अपने लोगों के सशक्तिकरण पर निर्भर हैं। इस उद्देश्य से, उन्होंने बाल विवाह और अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराईयों को खत्म करने के उद्देश्य से शैक्षणिक संस्थानों और सामाजिक सुधार आंदोलनों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दादाभाई नौरोजी की विरासत उनके जीवनकाल से कहीं आगे तक फैली हुई है। उन्होंने भारतीय स्वातंत्रता आन्दोलन के भावी नेताओं के लिए आधार तैयार किया और उन्हें स्वतंत्रता और न्याय के लिए संघर्ष जारी रखने के लिए प्रेरित किया। अर्थशास्त्र में उनका अग्रणी कार्य और भारत की स्वतंत्रता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता उन्हें भारतीय इतिहास में एक महान व्यक्ति बनाती हैं, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए श्रद्धा और स्मरण का पात्र है।

दादाभाई नौरोजी के आर्थिक विचार

दादाभाई नौरोजी, जिन्हें अक्सर "भारत के ग्रेंड ओल्ड मैन" के रूप में जाना जाता हैं, भारतीय राष्ट्रवादी आन्दोलन में एक प्रमुख व्यक्ति और एक अग्रणी अर्थशास्त्री थे। उनके आर्थिक विचारों और लेखन ने 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरूआत में भारत के आर्थिक विमर्श को आकार देने में महत्वूपर्ण भूमिका निभाई। यहां कुछ प्रमुख बिन्दु दिए गए जो उनके आर्थिक विचारों पर प्रकाश डालते हैं:

1. **अपवाह सिद्धान्त :** नौरोजी को उनके अपवाह सिद्धान्त के लिए जाना जाता है, जिसे उन्होंने अपने काम "भारत में गरीबी और गैर–ब्रिटिश शासन" में व्यक्त किया था। उन्होंने तर्क दिया कि ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के कारण भारत का धन ब्रिटेन की ओर आर्थिक रूप से चला गया। नौरोजी के अनुसार, यह अपवाह भारत में गरीबी का प्राथमिक कारण थी, क्योंकि ब्रिटिश अर्थव्यवस्था को लाभ पहुँचाने के लिए देश के संसाधनों का दुरूपयोग किया जा रहा था।
2. **आर्थिक राष्ट्रवाद :** नौरोजी आर्थिक राष्ट्रवाद के कट्टर समर्थक थे। उनका मानना था कि भारत को आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए प्रयास करना चाहिए और अपनी आर्थिक भलाई के लिए विदेशी शक्तियों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। उन्होंने आर्थिक विकास और समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए स्वदेशी उद्योगों और व्यापार को विकसित करने के महत्व पर जोर दिया।
3. **ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की आलोचना :** नौरोजी भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा अपनाई गई आर्थिक नीतियों के आलोचक थे। उन्होंने तर्क दिया कि ये नीतियां भारत के आर्थिक हितों की कीमत पर ब्रिटेन को लाभ पहुँचाने के लिए बनाई गई थीं। नौरोजी ने असमान व्यापार संबंधों, उच्च कराधान और अंग्रेजों द्वारा भारत के संसाधनों के शोषण जैसे मुद्दों पर प्रकाश डाला।
4. **उचित कराधान की वकालत :** नौरोजी ने भारत में निष्पक्ष और न्यायसंगत कर प्रणाली की वकालत की। उन्होंने भारतीय किसानों और व्यवसायों पर कराधान के भारी बोझ की आलोचना की, जिसे उन्होंने देश की दरिद्रता में योगदान के रूप में देखा। नौरोजी ने कर सुधारों का आह्वान किया जिससे भारतीय आबादी पर कर का बोझ कम होगा और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

5. **शिक्षा और मानव पूंजी को बढ़ावा :** नौरोजी ने आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने में शिक्षा और मानव पूंजी के महत्व का पहचाना। उन्होंने भारतीय कार्यबल के कौशल और क्षमताओं को विकसित करने के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण में निवेश का वकालत की। नौरोजी का मानना था कि भारत की आर्थिक प्रगति के लिए एक सुशिक्षित और कुशल जनसंख्या आवश्यक है।

6. **आर्थिक विकास में राज्य की भूमिका :** नौरोजी का मानना था कि आर्थिक विकास और कल्याण को बढ़ावा देने में राज्य की महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने और भारतीय आबादी के जीवन स्तर में सुधार के लिए बुनियादी ढ़ाँचे के विकास, औद्योगीकरण और सामाजिक कल्याण जैसे क्षेत्रों में राज्य के हस्तक्षेप का तर्क दिया।

7. **आर्थिक व्यापार और वाणिज्य :** नौरोजी ने भारत के आर्थिक विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वाणिज्य के महत्व को पहचाना। उन्होंने वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति को मजबूत करने के लिए अन्य देशों के साथ निष्पक्ष व्यापार संबंधों की आवश्यकता और एक मजबूत निर्यात–उन्मुख अर्थव्यवस्था विकसित करने के महत्व पर जोर दिया।

8. **सामाजिक–आर्थिक सुधार :** नौरोजी गरीब, असमानता और सामाजिक न्याय जैसे व्यापक सामाजिक–आर्थिक मुद्दों से भी चिंतित थे। उनका मानना था कि गरीबी के मूल कारणों को दूर करने और भारतीय लोगों की समग्र भलाई में सुधार के लिए आर्थिक सुधारों के साथ–साथ सामाजिक सुधार भी होने चाहिए। दादाभाई नौरोजी के आर्थिक विचार औपनिवेशिक भारत में आर्थिक विमर्श को आकार देने में प्रभावशाली थे। आर्थिक राष्ट्रवाद, निष्पक्ष कराधान, शिक्षा और राज्य के हस्तक्षेप पर उनके जोर ने भारत में बाद के आर्थिक विचारकों और नीति निर्माताओं के लिए नींव रखी, जिन्होंने देश के आर्थिक विकास और स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान दिया।

आलोचना

दादाभाई नौरोजी, भारत के आर्थिक इतिहास के एक प्रमुख व्यक्ति, अपने प्रभावशाली आर्थिक विचारों के लिए जाने जाते हैं, विशेष रूप से औपनिवेशिक काल के दौरान भारत से ब्रिटेन में धन की निकासी के संबंध में। हालाँकि, उनका योगदान कई मायनों में महत्वपूर्ण और अभूतपूर्व था, लेकिन उन्हें कई मोर्चों पर आलोचना का भी सामना करना पड़ा। नौरोजी के आर्थिक विचारों की आलोचनाओं में से एक भारत से धन की निकासी के बारे में उनके दावों का समर्थन करने के लिए अनुभवजन्य साक्ष्य की कमी है। जबकि उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों को तर्क दिए, कुछ विद्वानों ने बताया है कि धन निकासी के उनके अनुमान सीमित आंकड़ों पर आधारित थे और हो सकता है कि उन्हें बढ़ा–चढ़ाकर पेश किया गया हो। आलोचकों का तर्क है कि नौरोजी के दावों को मान्य करने के लिए ऐतिहासिक आर्थिक आंकड़ों का अधिक सूक्ष्म और कठोर विश्लेषण आवश्यक है। एक अन्य आलोचना भारत की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों के बहिष्कार पर नौरोजी के नाली सिद्धान्त पर ध्यान केन्द्रित करने के इर्द–गिर्द घूमती है। जबकि औपनिवेशिक काल के दौरान धन की निकासी निस्संदेह एक महत्वपूर्ण मुद्दा थी, आलोचकों का तर्क है कि नौरोजी ने भारत की आर्थिक चुनौतियों को पूरी तरह से निकासी के लिए जिम्मेदार ठहराकर उन्हें अधिक सरल बना दिया है। उनका तर्क है कि संस्थागत कमजोरियाँ, सामाजिक संरचनाएँ और तकनीकी ठहराव जैसे अन्य कारकों ने भी भारत की आर्थिक स्थिति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसके अतिरिक्त, कुछ आलोचकों ने समकालीन संदर्भ में नौरोजी के आर्थिक सिद्धान्तों की प्रयोज्यता के बारे में चिंता जताई है। उनका तर्क है कि जबकि उनके विचार औपनिवेशिक युग के दौरान प्रासंगिक थे, तब से भारत के आर्थिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। इसलिए, आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था की जटिलताओं को दूर करने के लिए नौरोजी के सिद्धान्तों को अनुकूलित और प्रासंगिक बनाने की आवश्यकता है। इन आलोचनाओं के बावजूद, भारत के आर्थिक विमर्श को आकार देने में नौरोजी की अग्रणी भूमिका को स्वीकार करना महत्वपूर्ण हैं। उनके काम ने भविष्य के विद्वानों और नीति निर्माताओं के लिए भारत में आर्थिक शोषण, विकास और शासन के मुद्दों पर गम्भीर रूप से जुड़ने की हैं, वे भारत की बौद्धिक विरासत का एक अनिवार्य हिस्सा बने हुए हैं और विद्वानों की बहस और जांच को प्रेरित करते रहते हैं।

संदर्भ

Chandra, B. (1970). The Economic Ideas of Dadabhai Naoroji.*Economic and Political Weekly.*Vol. 5 (26), pp.1073-1076.

Roy, T. (2008).Rethinking Dadabhai Naoroji's Drain Theory.*Economic and Political Weekly.*Vol. 43 (47), pp. 41-49.

Bagchi, A. K. (1975). Some Characteristics of Industrial Growth in India.*Economic and Political Weekly*, Vol. 10, No. 5/7, Annual Number (Feb.,), pp. 157-159+161+163-164.

Chandra, B. (1991). Colonial India: British versus Indian Views of Development. *Review (Fernand Braudel Center)*, Vol. 14, No. 1 (Winter,), pp. 81-167.

Thakur, K. K. (2013). British Colonial Exploitation of India and Globalization.*Proceedings of the Indian History Congress,* Vol. 74, pp. 405-415.

Naik, J. V. (2001). Forerunners of Dadabhai Naoroji's Drain Theory.*Economic and Political Weekly*, Vol. 36, No. 46/47 (Nov. 24-30), pp. 4428-4432.